# उपसंहार

# उपसंहार

प्रयोगधर्मी नाटककार सर्वेश्वर दयाल सक्सेना हिंदी के महत्वपूर्ण साहित्यकार रहे हैं। युवावस्था से ही उन्होंने कविता और कहानियाँ लिखना आरंभ किया था । पिताजी के विरोध के बावजूद भी वे अपने जीवन के अंतिम क्षणों तक साहित्य के आराधना में लीन रहे। उन्होंने अपनी प्रतिभा शक्ति की सहायता से बहुमुखी साहित्य का सृजन करके अपनी प्रतिभा का परिचय दिया ।

सक्सेना का बाल्यकाल देहात में बीता । उनके परिवार की स्थिति सोचनीय थी। उसमें माँ-बाप की मृत्यु से उन्हें बड़ा आघात हुआ । इसका परिणाम उनके भावी जीवन पर दिखायी देता है। वे आत्मनिर्भर थे, इसलिए पढ़ाई करते समय अपने आर्थिक जरुरतों का प्रबंध खुद करते थे और दूसरों की भी सहायता करते थे। उन्होंने एम.ए. तक की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् अनेक जगह पर नौकरियाँ की । लेकिन स्थायी रुप में कोई भी नौकरी उन्हें साथ नहीं दे पायी । अंत में उन्होंने संपादन कार्य शुरु किया था। उनका विवाह श्री.सच्चिनानंद वर्मा की पुत्री विमला से हुआ था। पत्नी की मृत्यु से उनके जीवन में उदासिनता आ गयी। उनका 'अभिजित' नामक पुत्र भी तीन वर्ष की अवस्था में चल बसा । फिर दो बेटियाँ - 'विभा' और 'शुभा' के साथ दुःख, दर्द बाँटने में ही उनका जीवन व्यतीत हुआ । अतः ऐसे प्रतिभासंपन्न साहित्यकार का निधन २३ सितंबर, १९८३ ई. की रात में दिल का दौरा पड़ने से हुआ । तब से हिंदी साहित्य को उनकी कमी हमेशामहसूस होती रही।

सक्सेना का चेहरा गंभीर और चिंतनशील था। उसपर हमेशा स्वाभिमान की दमक विद्यमान रहती थी। आवाज खनकदार तथा गहरी थी। वे पैण्ट और कमीज पहनते थे। ग्रामीण परिवेश में बड़े होने के कारण उनका रहन-सहन अत्यंत सीधा-सादा था। परिश्रमी एवं आत्मनिर्भर, प्रतिभासंपन्नता, निष्पक्षता, प्रेरक तथा विद्रोही व्यक्तित्व, गरीबों उनके व्यक्तित्व की विशेषताएँ थी। वे एक ऐसे बहुमुखी प्रतिभासंपन्न साहित्यकार थे, जिनमें एक ओर आत्मविश्वास, दृढ़ता, स्पष्टता, दार्शनिकता है। उनका व्यक्तित्व लोगों को प्रेरणादायी सिद्ध हुआ है।

सक्सेना 'तीसरे सप्तक' के प्रमुख कवि रहे हैं। वे मूलतः कवि होने के बावजूद अन्य विधाओं में भी उनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने अपने जीवन में सात काव्य-संग्रहों, तीन उपन्यासों, दो कहानी- संग्रहों, तीन नाटकों के साथ-साथ एकांकी, नुक्कड नाटक, नृत्य नाटिका, रेडिओ रुपक, यात्रा संस्मरण और बाल-साहित्य भी लिखा है। उन्होंने जो देखा और भोगा है उसे ही अपने साहित्य का केंद्रीय विषय बनाया है। इसलिए उनके व्यक्तित्व का कृतित्व पर गहार प्रभाव

दिखायी देता है। व्यवस्था के प्रति आवाज उठानेवाले 'बकरी', 'लड़ाई' और 'अब गरीबी हटाओ' जैसी उनके बहुमूल्य नाट्य कृत्तियों से हिंदी साहित्य समृद्ध हुआ है।

सक्सेना ने निम्न-मध्यवर्ग को केंद्र में रखकर साहित्य निर्माण किया है। उनपर नेताजी सुभाषचंद्र, लोहिया और मुक्तिबोध का प्रभाव दिखायी देता है। सत्य और यथार्थ को समाज के सामने रखने में वे कभी पीछे नहीं रहे। उनके साहित्य में व्यवस्था पर भरपूर व्यंग्य हैं। उन्होंने अपनी कविताओं में ट्रुगीन विरोधाभासों, असंगातियों और विकृतियों को अभिव्यक्ति का विषय बनाया है। तो उनके कहानियों में आम आदमी के जिंदगी की त्रासदी के दर्शन होते हैं। उन्होंने अपने नाटक द्वारा सामाज्कि विसंगति, छिछली राजनीति और अमानवीय प्रणाली का पर्दाफाश किया है। इसी कारण हिंदी साहित्य में उनकी अलग पहचान बनी है।

उन्होंने केवल मनोरंजन के लिए साहित्य न लिखकर उसके द्वारा समाज में व्याप्त विसंगतियाँ, विकृतियों का पर्दाफाश करके उसमें परिवर्तन लाने का प्रयास किया है। उनके साहित्य में जीवन के प्रति अनुराग, सत्य के लिए आग्रह, विषमताओं के प्रति सजग दृष्टि, कड़ा व्यंग्य और नए बिंबों की क्षमता है। अतः उनका संपूर्ण साहित्य इन्सानियत के लिए लड़ता है।

सक्सेना ने अपने नाटकों के माध्यम अनेक कथ्यों को पाठकों के सामने रखा हैं। 'बकरी' के माध्यम से बताया है कि स्वाधीनता के पश्चात् हमें अपने ही नेताओं के छलना आरंभ किया है। गांधीजी के सिद्धांतों का दुरुपयोग करके सामान्य जनता पर अन्याय- अत्याचार करके उनका शोषण किया जा रहा है। इस शोषण के प्रति विद्रोह भाव जगाना की इस नाटक की मूल चेतना है।

सक्सेना ने राजनीतिक मूल्यों पर दृष्टिपात करते हुए बताया है कि आज ऐसा काई नेता नहीं है, जिसपर भरोसा किया जा सके । इसलिए वे व्यवस्था में परिवर्तन चाहते है। इस क्रांतिकारी परिवर्तन के लिए वे युवकों पर अधिक भरोसा करते है। युवक के पात्र द्वारा उन्होंने स्पष्ट किया है कि भारतीय जनता को लूटनेवाले राजनेताओं को युवक ही सबक सीखा सकता है। अतः नया परिवर्तन युवकों से ही अपेक्षित है।

'लड़ाई' नाटक के कथ्य द्वारा सक्सेना के विभिन्न क्षेत्रों के सत्य को उजागर किया है। जैसे मंजन की शीशी में मिलावट है, शक्कर काले बाजार से खरीदी है, डबलरोटी (ब्रेड) में शुद्धपन का अभाव है आदि। इससे ग्राहकों को सचेत करना उनका लक्ष्य रहा है। उसके बाद बच्चों को मातृभाषा में पढ़ाने की आवश्यकता बतायी है। इकसे अभाव में हम अंग्रेजी भाषा के मानसिक गुलाम बन रहे

है। आज भ्रष्टाचार ही शिष्टाचार बन गया है। कोई भी क्षेत्र उससे अछूता नहीं रहा है। बस में कंडक्टर एक आदमी के पैसे लेकर उसे बिना टिकट दिए भ्रष्टाचार करता है। राशन दफ्तर में घूस के बिना काम नहीं करते । अखबारवाले भी उनके खिलाफ शिकायत नहीं छापते । अस्पताल में गरीबों को टालकर मिनिस्टर साहब के आदमी को जगह दी जाती है। इस प्रकार समाज में फैले दूराचार पर अपने कथ्य के अनुसार सक्सेना ने प्रकाश ड़ाला है।

स्वामी महेश्वरानंद जैसे व्यक्ति धर्म का सहारा लेकर लोगों को लूटते हैं। पुलिस गुनहगार को छोड़कर निरापराध लोगों को बिना वजह तंग करती है। अपने कथ्य के अनुसार नाटक के अंत में सक्सेना पाठकों को सद्य स्थिति पर सोचने के लिए मजबूर करते है। और सत्य की लड़ाई में सबको हिस्सा लेने का आवाहन करते है।

'अब गरीबी हटाओ' नाटक के कथ्य द्वारा लोकतंत्र की मानसिकता, राजतंत्र की वृत्ति तथा गरीबी पर प्रकाश ड़ाला है। लोकतंत्र और राजतंत्र में बार-बार गरीबी हटाने के वादे होते रहे । लेकिन दोनों भी गरीबी हटाने में असमर्थ रहे है। अतः उसके लिए स्वयं गरीबों को ही मिलकर प्रयास करना चाहिए ।

लोकतंत्र में सरपंच और दरोगा जेल में औरत की इज्जत लूटते हैं । तो राजतंत्र में राजा एक गरीब औरत के पति को कैद करके उसे अपने वासना का शिकार बनाता है। इस प्रकार लोकतंत्र और राजतंत्र में जनता पर अन्याय ही हुआ है। सिर्फ अन्याय करनेवालों के पद, रुप एवं नाम बदल गए है। इस प्रकार इस नाटक के द्वारा सक्सेना ने विसंगति, झूठ, पाखण्ड से दूर रहकर अन्याय-अत्याचार का ड़टकर विरोध करने की सलाह दी है।

शिल्प वह माध्यम है, जिसके द्वारा साहित्यकार अपने मूर्त अमूर्त भावनाओं को प्रेक्षक के सामने प्रस्तुत करता है। नाट्य-शिल्प की दृष्टि से सक्सेना के नाटकों का अध्ययन करते समय कथावस्तु, पात्र (चरित्र-चित्रण), कथोपकथन (संवाद), देशकाल वातावरण, भाषा-शैली, उद्देश्य, अभिनेयता, रंगमंचनिर्देश, दृश्य-विधान और गीत योजना आदि का विवेचन किया है।

सक्सेना ने आपादोत्तर काल में स्वंत्र भारत में निर्मित परिस्थिति को कथावस्तु का आधार बनाया है। 'बकरी' राजनीतिक व्यंग्य रुपक हैं। उसमें गांधीवादी सिध्दांतो का दुरुपयोग करके सामान्य जनता पर किए जानेवाले अन्याय का चित्रण हैं । उसमें राजनेताओं के चारित्रिक पतन को दर्शाया है। एक युवक लोगों में चेतना जगाकर राजनेताओं को विरोध करता है। अंत में सब मिलकर

राजनेताओं को रंगेहाथ पकड़ते है। अतः नाटक का अंत सुखांत रहा है।

'लड़ाई' के कथावस्तु के लिए जन समाज के चारों ओर व्याप्त भ्रष्टाचार के खिलाफ छेड़ी लड़ाई को आधार बनाया है। इसमें सत्य की लड़ाई में सबको हिस्सा लेने का आवाहन किया है।

'अब गरीबी हटाओ' के कथानक द्वारा लोकतंत्र की मानसिकता, राजतंत्र की वृत्ति और देश की गरीबी पर प्रकाश ड़ाला है। इसमें गरीबी हटाने के लिए स्वयं गरीबों को ही प्रयास करना चाहिए। यह गरीबी हटाने का उपाय बताया हैं।

इस प्रकार सक्सेना ने नाटकों की कथावस्तु सरल, संक्षिप्त तथा आम आदमी के इर्द-गिर्द घूमनेवाली है। कथानक को गति देने के लिए उन्होंने अनेक प्रमुख गौण पात्रों की निर्मिति की है । उनके नाटकों में पात्रों की अनावश्यक भीड़ नहीं हैं 'बकरी' में युवक ऐसा विद्रोही पात्र है, जो जनवादी चेतना का सशक्त प्रतिनिधित्व करता है। वह अपने विचारों के बल पर नाटक को नयी दिशा की ओर ले जाता है। युवक नाटक का सक्रिय पात्र है। विपती नामक स्त्री पात्र सामान्य जनता का प्रतिनिधित्व करनेवाला है। नाटक के अन्य पात्रों में दुर्जनसिंह राजनेता का प्रतीक है, तो कर्मवीर और सत्यवीर क्रमशः गांधीजी द्वारा बताए गए कर्म, सत्य सिद्धांत के प्रतीक है। वे व्यवहार में इस सिद्धांत के खिलाफ आचरण करते है। इसके अलावा सिपाही, नट, नटी, भिश्ती आदि गौण पात्र भी इसमें मौजूद हैं।

'लड़ाई' में सत्य के लिए लड़नेवाले सत्यव्रत का चरित्र प्रस्तुत है। पूरे नाटक में उसकी सत्य के लिए लड़ाई दिखायी है। अंत में सत्य के लिए लडते हुए वह मर जाता है। घोर अन्यायी, अलोकतांत्रिक और जनविरोधी व्यवस्था का खुनी चेहरा उघाड़नेवाला महत्वपूर्ण पात्र सत्यव्रत है। इसके अलावा नाटक में सत्यव्रत की पत्नी है। बासी रोटियाँ बेचनेवाला रोटीवाला है। पाश्चात्य सभ्यता का अनुकरण करनेवाल प्रिंसिपल है। भ्रष्ट मनोवृत्तिवाला कंडक्टर है। राशन दफ्तर का अधिकारी और अखबार का संपादक है। अपने फर्ज के खिलाफ आचरण करनेवाला डॉक्टर है। बुद्धिजीवी वर्ग का प्रतिनिधि बुद्धिजीवी नामक पात्र है। धर्म का सहारा लेकर लूटनेवाला स्वामी महेश्वरानंद है। इसके अलावा दरोगा, सरपंच, इंसपेक्टर, चपराशी, भिखारी, पुलिस, बदमाश आदि पात्रों का सहारा लिया है।

'अब गरीबी हटाओ' में स्त्ता प्रतीक मुख्यमंत्री, राजनेताओं का प्रतीक सरपंच, तो विलासिता का प्रतीक राजा है। नेताजी सुविधाभोगी पात्र के रुप में उपस्थित है। ये लोगों पर अन्याय-

अत्याचार करते है। इनके अलावा टुच्चे राजनेता का चमचा दरोगा है। राजा के असलीयत का पर्दाफाश करनेवाला पात्र प्रहरी है। सरपंच के क्रुरतम व्यवहार का शिकार ग्रामीण और आदमी है। इसके साथ औरत नामक पात्र है। उसको लोकतंत्र और राजतंत्र में वासना का शिकार बनाया है।

सक्सेना ने नाटकों कें संवाद सरल एवं स्वाभाविक है। कथोपकथन की संक्षिप्तता इनके नाटकों का एक गुण है। यद्यपि कुछ संवाद लंबे है, लेकिन प्रसंग को देखते हुए उन्हें अनुचित नहीं कहा जा सकता । कहीं पर व्यंग्यात्मक संवाद को कहीं पर गीत संवादों का प्रयोग किया है। गीतों के कारण संवादो में काव्यात्मकता आयी है। अतः संवादों में कथावस्तु के विकास की क्षमता और चरित्र विकसित करने की योग्यता है।

सक्सेना के नाटकों मैं स्वातंत्र्योत्तर काल (विशेषतः आपादोत्तर काल सन १९७२) के बाद भारत में निर्माण परिस्थिति का चित्रण है। उन्होंने वातावरण निर्मिति में संकलनत्रयी का ध्यान रखा है। वातावरण निर्मिति में प्रकाश, ध्वनि, गीत, संगीत आदि का सहारा लिया है।

नाटकों की भाषा में सक्सेना ने व्यंग्यात्मक, काव्यात्मक, वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक, प्रतीकात्मक आदि भाषा-शैलियों का प्रयोग किया है। पात्रानुकूल, सहज, सरल, स्वाभाविक भाषा, चलते-फिरते मुहावरें, लोकोक्तियाँ, साफ-सुथरे शब्द आदि उनके भाषा के अभिन्न अंग है। इनके नाटकों में अन्य भाषा के शब्दों का भी प्रयोग मिलता है।

सक्सेना के नाटकों का मूल प्रतिपाद्य है- अन्याय-अत्याचार का ड़टकर मुकाबला करना, राजनीति और समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, विसंगति पर प्रहार करके उसे समाप्त करने के लिए जनता को जागृत करना, गरीबी हटाने के लिए गरीबों को प्रेरित करना। लोगों को सत्य की लड़ाई में हिस्सा लेने तथा सद्यस्थिति पर सोचने के लिए मजबूर करना आदि । इस दृष्टि से उनके नाटकों का अंत आशावादी हुआ है।

अभिनय के लिए सक्सेना के नाटक आसान है। उनके 'बकरी' के तीन वर्ष में तीन सौ से अधिक प्रयोग हुए है। इसके खुले रंगमंच पर भी प्रयोग हुए है। पहले दृश्य में थोड़ा-सा परिवर्तन करके दूसरा दृश्य दिखाया जा सकता है। छोटे-छोटे दृश्य, सहज संवाद के कारण अभिनय में सुलभता आयी है। सक्सेना ने अपने कल्पना के अनुसार नाटक के बीच-बीच में आवश्यक रंगमंच निर्देश दिए हैं। उसका लाभ अभिनय करते समय होता है। कुछ बातों के निर्देश न देकर उसकी जिम्मेदारी निर्देशक पर सौंप दी है। दृश्य-परितर्वन के लिए प्रकाश योजना और ध्वनि-संकेतों का

सहारा लिया है। इनके नाटकों में गीतों का भी सहारा लिया है। गीतों के कारण प्रभावात्मकता बढ़ गयी है। 'बकरी' में कुल नौ गीतों की सृष्टि हुई हैं। कोई भी गीत कथावस्तु अथवा चरित्र के विकास में बाधक नहीं है। उन्होंने गीतों के माध्यम से भी व्यंग्य किया है। 'बकरी' में 'झंड़ागीत' के ताल पर 'डंड़ा गीत' गाया है। तीनों नाटकों का अंत उन्होंने गीत गायन से किया हैं।

'समस्या' ऐसा बिकट या कठिन प्रसंग है।, जिसका निराकरण सहज में नहीं हो सकता । समस्या से कोई भी क्षेत्र आज अछूता नहीं है। उसका स्वरुप विश्वव्याप्त है। समस्या और साहित्य का अटूट संबध हैं । क्योंकि साहित्य में समस्या का चित्रण होता है।

सक्सेना ने नाटकों में अनेक समसामायिक समस्याओं का चित्रण हुआ है। उनके 'बकरी' नाटक में 'राजनीतिक समस्या' मुख्य है। कर्मवीर, सत्यवीर और दुर्जनसिंह जैसे स्वार्थी नेता सत्ता प्राप्ति के लिए नीति, नियम तोड़कर आचरण करते हैं। और सत्ता प्राप्ति के बाद भी जनता पर अन्याय-अत्याचार करते है। इसके साथ 'भ्रष्टाचार की समस्या' का चित्रण भी इसमें मिलता है। भ्रष्ट आचरण के कारण अधिकारी दूराचार करने लगते है। 'लड़ाई' में घूस न मिलने के कारण राशन कार्ड बनवाया नहीं है। कंडक्टर युक्ति से बस के पैसे हड़प लेता है। अर्थाभाव एक महत्वपूर्ण समस्या है। वह अनेक समस्याओं की जड़ है।

अपने देश में बढ़ती आबादी के कारण बेसहारा लोगों की संख्या बढ़ रही है। ऐसे 'बेसहारा लोगों की समस्या' का जिक्र करते हुए बताया है कि, आज की शिक्षण पद्धति से ऐसे लोग पढ़कर निकल रहे है। जो रोजगार उपलब्धि में असमर्थ है।

पाश्चात्य भौतिकवादी प्रवृत्ति के अनुकरण के कारण अनेक समस्याएँ निर्माण हुई । उसमें 'भाषा की समस्या' एक है। इसका भी चित्रण सक्सेना के नाटकों में मिलता है। उन्होंने 'धार्मिक समस्या' द्वारा स्पष्ट किया है। कि लोगों को लूटने के लिए धर्म का भी सहारा लिया जा रहा है। बरसों से चली आ रही हमारे देश की 'गरीबी तथा दरिद्रता की समस्या' भी इनके नाटकों में चित्रित है। 'अब गरीबी हटाओ' में गरीबी से तंग आकर एक औरत दो बच्चों के साथ कुएँ में जान देने चली थी।

प्राचीन काल से 'अंधविश्वास' और 'जाति की समस्या' भारतीय समाज में मौजूद है। उसका भी चित्रण सक्सेना के नाटकों में मिलता है। 'राजनीतिक अव्यवस्था', राजनेताओं द्वारा किया जानेवाला 'अन्याय-अत्याचार,' 'शोषण की समस्या' को भी सक्सेना ने अपने नाटकों में

स्थान दिया है। राजकीय अव्यवस्था के कारण जनता को शासन की चक्की में बुरी तरह पीसना पड़ता है। समाज में कहीं भी आदर्श नहीं रहा है। सभी ओर झूठ-धोखेबाजी चल रही है। इसका नतीजा शुद्ध चीजें नहीं मिलती । ऐसे 'मिलावट की समस्या' को भी उनके नाटकों मे पाया जा सकता है। साथ ही 'पथभ्रष्ट अखबार' और 'यातायात की समस्या' को भी उन्होंने छोड़ा नहीं है। अतः समकालीन परिस्थिति में भी उनके नाटक प्रासंगिक लगते है।

सक्सेना के नाटकों में इन समस्याओं का समाधान भी मिलता हैं। इस दृष्टि से उनके नाटकों के अंत महत्वपूर्ण है। क्योंकि अंतिम हिस्से में इन समस्याओं का हल मिल सकता है।

**प्रबंध की मौलिकता -**

१. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में सक्सेना के 'बकरी', 'लड़ाई', और 'अब गरीबी हटाओ' नाटकों का तत्त्वों के आधारपर विस्तृत विवेचन किया हैं।

२. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में उपर्युक्त तीनों नाटकों के कथ्य के संदर्भ में विवेचन किया हैं।

३. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में सक्सेना के उपर्युक्त तीनों नाटकों में चित्रित समस्याओं का विश्लेषण पहली बार किया हैं।

**अनुसंधान की नई दिशाएँ -**

एम्.फिल्.के लघु शोध-प्रबंध में कथ्य विषय के सभी अंगों का अनुसंधान करना संभव नहीं होता । अतः'सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटकों का अनुशीलन'नाटक के तत्त्वों के आधारपर किया है। नाटकों का अनुशीलन करते समय मेरी अपनी सीमा थी। अतः भविष्य में निम्ननिलिखित विषयों पर स्वतंत्र रुप से अनुसंधान हो सकता है।

१) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटकों में चित्रित सामाजिक जीवन ।

२) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटकों में अभिनेयता ।

३) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटकों में राजनीतिक व्यंग्य ।

❖ ❖ ❖